

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 3 अध्याय 24: भगवान् कपिल का अवतार

13 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जिस प्रकार शुष्क काष्ठ के घर्षण से अग्नि प्रकट होती है, उसी प्रकार भगवान् पहले ऋषि कर्दम में और फिर देवहूति के गर्भ में प्रकट होते हैं — और उसी क्षण आश्रम के ऊपर आकाश पुष्प-वृष्टि, मृदंग-सम गर्जन तथा गन्धर्वों के गीतों से भर उठता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय ने देवहूति को — जिनकी नौ पुत्रियाँ जन्म ले चुकी थीं, जिनका यौवन प्रतीक्षा में बीत चुका था, तथा जिनके पति कर्दम अपनी तपस्या के सम्पूर्ण सामर्थ्य से उनके सुख हेतु निर्मित विमान-रूपी महल में — अन्ततः “वैराग्य से पूर्ण” वचनों में कर्दम से बोलते हुए छोड़ा था,

कोमलतापूर्वक उन्हें विवाह से पूर्व स्वयं भगवान् विष्णु द्वारा किए गए उस वचन का स्मरण कराते हुए कि भगवान् उनके पुत्र-रूप में जन्म लेंगे। चतुर्विंश अध्याय उसी स्मरण का उत्तर है। यह वह अध्याय है जिसमें दीर्घकाल से प्रतीक्षित एक वचन अन्ततः पूर्ण होता है — शान्तिपूर्वक, अपने आप में किसी आडम्बर के बिना, फिर भी उन सभी दिव्य चिह्नों के साथ चिह्नित होकर जिन्हें शास्त्र भगवान् के स्वयं के अवतरण हेतु सुरक्षित रखता है। कर्दम अपनी पत्नी को आश्चस्त करते हैं; भगवान् दोनों माता-पिता के माध्यम से उसी प्रकार प्रकट होते हैं जिस प्रकार काष्ठ से अग्नि प्रकट होती है; स्वयं ब्रह्मा जो हुआ है उसकी पुष्टि करने तथा कर्दम की नौ पुत्रियों का विवाह सम्पन्न कराने के लिए आश्रम की ओर आते हैं; और अन्त में, अध्याय के सर्वाधिक हृदयस्पर्शी अंश में, पिता अपने ही नवजात पुत्र को साक्षात् भगवान् के रूप में पहचानता है, उन्हें समर्पण का एक स्तोत्र अर्पित करता है, तथा एक भ्रमणशील संन्यासी बनने के लिए विदा लेता है — कपिल को, जो अब भगवान् मानव-शिशु के रूप में अवतरित हैं, अपनी माता को उसी ज्ञान की शिक्षा देने हेतु पीछे छोड़ते हुए, जिसे सिखाने वे संसार में आए हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 3 (तृतीय स्कन्ध)
- अध्याय: 24 (चतुर्विंश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भगवान् कपिल का अवतार
- मुख्य वक्ता: मैत्रेय, विदुर को सम्पूर्ण कथा सुनाते हुए; उनके कथन के भीतर प्रत्यक्ष वाणी के चार अंश पूर्ण रूप से उद्धृत हैं — देवहूति को कर्दम का उत्तर (श्लोक 2–4), कर्दम तथा देवहूति को ब्रह्मा का सम्बोधन (श्लोक 12–19), अपने नवजात पुत्र को कर्दम का स्वयं का स्तोत्र (श्लोक 26–34), तथा पिता को भगवान् का उत्तर (श्लोक 35–40)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थान: सरस्वती नदी के तट पर ऋषि कर्दम का आश्रम
- मुख्य विषय-वस्तु: कर्दम तथा देवहूति के माध्यम से भगवान् का कपिल-रूप में अवतार; ब्रह्मा का आगमन तथा कर्दम की नौ पुत्रियों के विवाह के विषय में उनका निर्देश; कर्दम द्वारा अपने पुत्र को साक्षात् भगवान् के रूप में पहचानना तथा समर्पण का स्तोत्र; भगवान् द्वारा अपने जन्म का कारण स्पष्ट करना; तथा कर्दम का संन्यास-जीवन में प्रस्थान तथा परमात्मा से अन्तिम मिलन
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 3, अध्याय 24, श्लोक 1–47
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

“अपनी चिन्ता मत करो”

अध्याय ठीक वहीं से आरम्भ होता है जहाँ पिछले अध्याय का गार्हस्थ्य-नाटक समाप्त हुआ था — भगवान् के आगमन से नहीं, अपितु एक ऐसी पत्नी के प्रति पति की कोमलता से, जिसने अपना यौवन प्रतीक्षा में बिताया है।

मैत्रेय ने आगे कहा: जब स्वायम्भुव मनु की पुत्री देवहूति ने ऐसे वैराग्यपूर्ण वचन कहे, तब दयालु ऋषि कर्दम को भगवान् विष्णु के वचन का स्मरण हो आया और उन्होंने उत्तर दिया। (श्लोक 1)

कर्म आगे जो कहते हैं वह विचार करने योग्य है, क्योंकि यह कोई दार्शनिक प्रवचन नहीं अपितु एक सरल, प्रत्यक्ष सान्त्वना है: “हे निष्कलंक आचरण वाली राजकुमारी, अपनी चिन्ता मत करो। अमर भगवान् शीघ्र ही तुम्हारे गर्भ में प्रवेश करेंगे।” (श्लोक 2) तत्पश्चात् वे उन्हें कोमलतापूर्वक निर्देश देते हैं कि उन्हें आगे क्या करना है — इन्द्रियों के संयम, धार्मिक अनुष्ठान, तपस्या तथा दान के द्वारा भगवान् की श्रद्धापूर्वक आराधना करना — क्योंकि, वे वचन देते हैं, ऐसी ही आराधना के माध्यम से भगवान् विष्णु उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे, उनके हृदय में अज्ञान की ग्रन्थि को आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा देकर ही काट देंगे। (श्लोक 3-4) यहाँ घटनाओं के क्रम में कुछ शान्त रूप से बोधप्रद है: वचन पहले आता है, और साधना उसके पश्चात् ही दी जाती है — कृपा प्रयास से पहले आती है, यद्यपि प्रयास फिर भी अपेक्षित रहता है।



अपने पति के आश्वासन में पूर्ण श्रद्धा रखते हुए, देवहूति जगत् के आचार्य-रूप परम पुरुष की आराधना में प्रवृत्त होती हैं — वही शान्त, अनुशासित तैयारी जो भगवान् के अवतरण से पूर्व होती है (श्लोक 5)।

काष्ठ से प्रकट अग्नि: भगवान् का अवतार

कर्म के सन्देश में पूर्ण श्रद्धा रखते हुए, देवहूति ने अविनाशी परम पुरुष, जगत् के आचार्य की आराधना आरम्भ कर दी। (श्लोक 5) और तब, ग्रन्थ जिसे “पर्याप्त दीर्घकाल” कहता है, उसके पश्चात् वास्तविक अवतरण होता है — एक ऐसे सरल, एकल बिम्ब में वर्णित जो तब से भक्ति-साहित्य में गूँजता रहा है।

पर्याप्त दीर्घकाल के पश्चात् मधु दैत्य के संहारक भगवान् विष्णु पहले कर्म के वीर्य के माध्यम से और फिर देवहूति के माध्यम से प्रकट हुए, ठीक वैसे ही जैसे काष्ठ से अग्नि प्रकट होती है। (श्लोक 6)

तस्यां बहुतिथे काले
भगवान्मधुसूदनः ।
कार्दमं वीर्यमापन्नो
जज्ञेऽग्निरिव दारुणि ॥ ६ ॥

tasyām bahu-tithe kāle bhagavān madhusūdanaḥ kārdamaṁ vīryam āpanno jajñe 'gnir iva dāruṇi

अर्थ: दीर्घकाल के पश्चात्, भगवान् मधुसूदन ने — पहले कर्दम के ही अस्तित्व में प्रवेश करके — देवहूति के माध्यम से ठीक वैसे ही प्रकट हुए जैसे काष्ठ के भीतर से अग्नि प्रकट होती है: यह जन्म न तो साधारण था और न ही आकस्मिक, अपितु भगवान् का अपना ही चुना हुआ वह मार्ग था जिससे उन्होंने अपना वचन पूर्ण किया। (स्कन्ध 3, अध्याय 24, श्लोक 6)

शेष श्लोक-समूह जिस घटना को असाधारण मानता है, उसके लिए यह एक जान-बूझकर सरल बिम्ब है। ग्रन्थ बताता है कि उनके अवतरण के क्षण, बरसते हुए मेघों के रूप में देवगण आकाश में वाद्ययन्त्रों के समान गर्जन करने लगे; गन्धर्व, स्वर्ग के गायक, उनकी स्तुति गाने लगे; अप्सराएँ, स्वर्ग की नर्तकियाँ, आनन्दपूर्वक नृत्य करने लगीं; उड़ते हुए देवताओं से स्वर्गीय पुष्पों की वर्षा होने लगी; तथा समस्त दिशाएँ, समस्त जलाशय, और सभी लोगों के मन स्वच्छ हो गए। (श्लोक 7-8) संक्षेप में, समस्त सृष्टि व्यवस्था इस जन्म पर वैसे ही प्रतिक्रिया करती है जैसे वह सदा भगवान् के अवतरण पर करती है — इसलिए नहीं कि कोई राजा उत्पन्न हुआ है, अपितु इसलिए कि समस्त अस्तित्व का स्रोत ही, कुछ समय के लिए, उसी के भीतर पाया जाना चुनता है।



मृदंग-सम गर्जन, गन्धर्वों के गीत, नृत्य करती अप्सराएँ, तथा स्वर्गीय पुष्पों की वर्षा कर्दम और देवहूति के माध्यम से भगवान् के उस शान्त अवतरण-क्षण को चिह्नित करते हैं, “ठीक जैसे काष्ठ से अग्नि प्रकट होती है” (श्लोक 6-8)।

ब्रह्मा का आश्रम में आगमन

ऐसा समाचार अधिक समय तक किसी एक ही परिवार तक सीमित नहीं रहता, और अगले श्लोक एक विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण अतिथि के आगमन की ओर मुड़ते हैं।

स्वयंभू ब्रह्मा मरीचि तथा अन्य महान् ऋषियों के साथ सरस्वती नदी के तट पर स्थित कर्दम के प्रसिद्ध आश्रम में गए। (श्लोक 9) स्वभावतः सच्चे ज्ञान से सम्पन्न ब्रह्मा पहले से ही जानते थे कि भगवान् — जो साक्षात् परब्रह्म से भिन्न नहीं हैं — सांख्य दर्शन का ज्ञान प्रदान करने हेतु शुद्ध सत्त्व के माध्यम से अवतरित हुए हैं। (श्लोक 10) निष्कपट मन से भगवान् के अभिप्राय का स्वागत करते हुए, स्रष्टा ने आनन्द से परिपूर्ण होकर कर्दम तथा देवहूति से बात की। (श्लोक 11)

यह एक छोटा किन्तु सूचक विवरण है कि किसी के बताने से पहले ही ब्रह्मा “पहले से जानते थे” कि भगवान् क्यों अवतरित हुए हैं। इस वर्णन में कपिल का अवतार सृष्टि के सर्वोच्च प्राणी के लिए भी कोई आश्चर्य नहीं है — यह उस बात की पूर्ति है जिसे ब्रह्मा स्वयं दीर्घकाल से समझते आए थे, और आश्रम में उनका आगमन जाँच से कम, आनन्दपूर्ण पुष्टि से अधिक है।

ब्रह्मा का निर्देश: नौ पुत्रियाँ, एक दिव्य पुत्र

ब्रह्मा आगे जो कहते हैं उसमें उस पिता-तुल्य व्यक्ति के वचन का भार है जो एक ओर अपने गर्वित पुत्र को, तथा दूसरी ओर अपनी उस पुत्रवधू को सम्बोधित कर रहा है जिसकी दीर्घ प्रतीक्षा अब पुरस्कृत होने वाली है — और यह कुछ ही श्लोकों में साधारण गार्हस्थ्य परामर्श से नवजात शिशु के वास्तविक स्वरूप के प्रत्यक्ष प्रकटीकरण तक पहुँच जाता है।

ब्रह्मा ने कहा: “हे पुत्र, हे वृद्धजनों के सम्मानकर्ता, तुमने श्रद्धापूर्वक मेरी आज्ञा का पालन करके सचमुच मेरी पूजा की है।” (श्लोक 12) यह, वे आगे कहते हैं, वही सेवा है जो एक पुत्र अपने पिता के प्रति ऋणी है — उचित सम्मान के साथ उनकी आज्ञा के समक्ष झुकना। (श्लोक 13) व्यावहारिक विषयों की ओर मुड़ते हुए, ब्रह्मा कर्दम से कहते हैं कि उनकी कृशोदरी पुत्रियाँ अपनी सन्तानों के माध्यम से इस सृष्टि को बहुगुणित करेंगी, तथा उन्हें निर्देश देते हैं कि आज ही उन्हें प्रत्येक कन्या के स्वभाव तथा रुचि का ध्यान रखते हुए श्रेष्ठ ऋषियों को अर्पित कर दें — इस प्रकार अपनी कीर्ति को सम्पूर्ण जगत् में फैलाते हुए। (श्लोक 14–15)

तब ब्रह्मा का स्वर बदल जाता है, और अध्याय का केन्द्रीय रहस्योद्घाटन बिना किसी और भूमिका के प्रत्यक्ष रूप से दिया जाता है:

हे कर्दम, मैं जानता हूँ कि जीवों को समस्त वरदान देने वाले सबसे प्राचीन पुरुष स्वयं अपनी अद्भुत सृजनात्मक शक्ति के माध्यम से कपिल के रूप में अवतरित हुए हैं। (श्लोक 16)

देवहूति की ओर मुड़ते हुए, ब्रह्मा आगे कहते हैं: स्वर्णिम केशों, कमल-सम नेत्रों, तथा जिनके चरण-तल पर स्वयं कमल का चिह्न अंकित है, ऐसे साक्षात् भगवान् विष्णु ही हैं, कैटभ दैत्य के संहारक, जिन्होंने उनसे जन्म लिया है — कर्म की जड़ों को, आत्मा को बाँधने वाली प्रच्छन्न वासनाओं को, शास्त्र-ज्ञान तथा प्रत्यक्ष अनुभूति के माध्यम से उखाड़ फेंकने के लिए जन्म लिया है; तथा अज्ञान एवं मिथ्या-बोध की ग्रन्थि को काटकर, वे पृथ्वी पर विचरण करेंगे। (श्लोक 17–18) वे सिद्ध पुरुषों के स्वामी होंगे, सांख्य दर्शन के आचार्यों द्वारा सर्वोच्च सम्मान से देखे जाएँगे, संसार भर में कपिल नाम से विख्यात होंगे, और आगामी युगों तक देवहूति की ही कीर्ति फैलाएँगे। (श्लोक 19)



पिता से माता की ओर मुड़ते हुए, ब्रह्मा अध्याय का केन्द्रीय रहस्योद्घाटन सीधे देवहूति को अर्पित करते हैं: उनसे जन्मा शिशु स्वयं भगवान् विष्णु हैं, जो संसार भर में कपिल नाम से विख्यात होने वाले हैं (श्लोक 16-19)।

नौ ऋषि, नौ वधुएँ

दम्पति को आश्वस्त करने तथा अपना प्रयोजन पूर्ण करने के पश्चात्, ब्रह्मा अधिक समय तक नहीं ठहरते।

इस प्रकार दम्पति को आश्वस्त करके, सृष्टि के स्रष्टा ब्रह्मा अपने हंस पर सवार होकर सत्यलोक लौट गए, उनके साथ चारों कुमार — सनक तथा उनके तीन भाई — तथा नारद भी थे, ये सभी आजीवन ब्रह्मचारी थे; उन्होंने मरीचि तथा अन्य ऋषियों को पीछे छोड़ दिया ताकि वे कर्दम की नौ पुत्रियों का पाणिग्रहण कर सकें। (श्लोक 20)

आगे जो आता है वह सम्पूर्ण भागवत के सर्वाधिक शान्त रूप से महत्त्वपूर्ण वंशावली-अंशों में से एक है, क्योंकि ये नौ विवाह ही वे बीज हैं जिनसे परम्परा की लगभग प्रत्येक महान् ऋषि-परम्परा उत्पन्न होगी। ब्रह्मा के प्रस्थान के पश्चात्, कर्दम ने तुरन्त ही अपनी पुत्रियों का विवाह सृष्टि जीवों के स्वामियों से किया, ठीक वैसे ही जैसे स्रष्टा ने निर्देश दिया था तथा शास्त्रीय विधि के अनुसार। (श्लोक 21) उन्होंने कला मरीचि को दी, अनसूया अत्रि को; श्रद्धा उन्होंने अंगिरा को दी, तथा हविर्भू पुलस्त्य को। (श्लोक 22) उन्होंने गति, जो पुलह के अनुरूप थीं, उस ऋषि को दीं, तथा सती क्रिया क्रतु को; ख्याति उन्होंने भृगु को दी, तथा अरुन्धती वसिष्ठ को। (श्लोक 23) और ऋषि अथर्वा को उन्होंने शान्ति दी, जिनके माध्यम से यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है। विधिवत् विवाह हो जाने पर, कर्दम ने इन श्रेष्ठ ऋषियों तथा उनकी नई पत्नियों का हर प्रकार से आदरपूर्वक सत्कार किया। (श्लोक 24) इस प्रकार विवाहित होकर, ऋषियों ने कर्दम से विदा ली और आनन्दपूर्वक अपने-अपने आश्रम को प्रस्थान किया। (श्लोक 25)



कर्म अपनी नौ पुत्रियों — कला, अनसूया, श्रद्धा, हविर्भू, गति, क्रिया, ख्याति, अरुन्धती तथा शान्ति — का विवाह महान् आदि ऋषियों में से नौ के साथ करते हैं, उन वंश-परम्पराओं का बीजारोपण करते हुए जिनसे परम्परा का इतना ज्ञान प्रवाहित होगा (श्लोक 21-25)।

“ऐसे स्वामी से भेंट किसे प्राप्त होती है”: कर्म का स्तोत्र

परिवार के अन्य महान् दायित्व के अब पूर्ण हो जाने के साथ, अध्याय अपने भावनात्मक केन्द्र की ओर मुड़ता है: एक पिता जो पूर्णतः तथा अन्ततः पहचान लेता है कि उसका पुत्र वास्तव में कौन है।

यह जानकर कि जो उनसे जन्मे हैं वे साक्षात् भगवान् विष्णु हैं — शक्ति, ऐश्वर्य, धर्म, यश, ज्ञान तथा वैराग्य के दिव्य गुणों से पूर्णतः सम्पन्न — ऋषि अपने पुत्र के एकान्त में होने पर उनके पास गए और उनके समक्ष झुककर बोले। (श्लोक 26)

कर्म का यह आगामी स्तोत्र आश्चर्य, विनम्रता तथा संयमपूर्वक रोके गए शोक का एक विलक्षण मिश्रण है।

कर्म ने कहा: “हाय! जो लोग अपने ही दुष्कर्मों से इस संसार-नरक में जल रहे हैं, उन पर देवता बहुत दीर्घकाल के पश्चात् ही कृपा करते हैं। फिर भी, वह भगवान्, जिनके सत्य को साधना-रत आत्माएँ अनेक जन्मों की परिपक्व भक्ति द्वारा एकान्त में साक्षात्कार करने का प्रयास करती हैं, तथा जो अपने भक्तों के हित के लिए ही विद्यमान हैं, इस बार हम-सरीखे साधारण, इन्द्रिय-बद्ध मनुष्यों के घर में प्रकट हुए हैं — ऐसे जन्म की प्रतीत होने वाली प्रतीत गरिमा-हीनता से भी अविचलित रहते हुए। (श्लोक 27-29) केवल अपने भक्तों की गरिमा बढ़ाने के उद्देश्य से, आपने अपना वचन पूर्ण करने तथा सत्य ज्ञान की ओर ले जाने वाली सांख्य-पद्धति की स्थापना करने के लिए मेरे घर में जन्म लिया है। (श्लोक 30) हे भगवन्, आपके दिव्य स्वरूप ही वास्तव में आपके योग्य हैं; फिर भी वह मानवीय रूप जो आपके अपने भक्तों को आनन्दित करता है, वह भी आपको उतना ही प्रिय है, यद्यपि आप किसी भी भौतिक रूप से रहित हैं। (श्लोक 31) मैं आपकी शरण में हूँ, जिनके चरणों को प्रणाम करने योग्य ही वे ऋषि हैं जो सत्य को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं, तथा जो शक्ति, ऊर्जा, ज्ञान, वैराग्य, यश तथा ऐश्वर्य में पूर्ण हैं। (श्लोक 32) मैं कपिल की शरण में हूँ, वह परम भगवान् जो समस्त सामर्थ्य के अधिपति हैं, जो प्रकृति के रूप में, पुरुष के रूप में, विश्व-बुद्धि रूपी महत्त्व के रूप में, स्वयं काल के रूप में, त्रिविध अहंकार तथा उनके अधिष्ठाता देवताओं सहित अनेक लोकों के रूप में प्रकट होते हैं — और जो अपनी ही चेतना की शक्ति से इन समस्त परिघटनाओं को पुनः अपने भीतर समेट लेते हैं, वे सर्व-साक्षी द्रष्टा। (श्लोक 33) अपने पिता ब्रह्मा के प्रति उस

ऋण से मुक्त होकर, जिन्होंने मुझे विवाह करने तथा सन्तान उत्पन्न करने की आज्ञा दी थी, और आपके माध्यम से जो कुछ भी मैं चाह सकता था वह प्राप्त करके, हे समस्त सृष्ट प्राणियों के स्वामी, मैं आपसे विदा लेता हूँ। संन्यासी का मार्ग अपनाकर, मैं जहाँ चाहूँ विचरण करूँगा, शोक-रहित रहते हुए, सदैव आपको हृदय में धारण करते हुए।” (श्लोक 34)



अपने ही शिशु-पुत्र को साक्षात् भगवान् के रूप में पहचानते हुए, कर्दम उनके समक्ष आश्चर्य तथा समर्पण के एक स्तोत्र में झुकते हैं — यह अचरज व्यक्त करते हुए कि जिन्हें ऋषि युगों तक एकान्त में खोजते हैं, वे एक साधारण गृहस्थ के घर में प्रकट होना चुनते हैं (श्लोक 26-34)।

आ स्माभिपृच्छेऽद्य पतिं प्रजानां
त्वयावतीर्णर्ण उताप्तकामः ।
परिव्रजत्पदवीमास्थितोऽहं
चरिष्ये त्वां हृदि युञ्जन् विशोकः ॥ ३४ ॥

*ā smābhipṛcche 'dya patim prajānām tvayāvatīrṇarṇa utāpta-kāmaḥ parivrajat-padavim āsthito
'ham cariṣye tvām hṛdi yuñjan viśokah*

अर्थ: आपके माध्यम से अपने ऋण से मुक्त होकर, तथा अपनी समस्त इच्छाएँ प्राप्त करके, मैं अब आपसे, हे समस्त सृष्ट प्राणियों के स्वामी, विदा लेता हूँ; संन्यासी का मार्ग अपनाकर, मैं स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण करूँगा, आपको हृदय में धारण करते हुए तथा शोक-रहित रहते हुए। (स्कन्ध 3, अध्याय 24, श्लोक 34)

यहाँ एक दार्शनिक तथ्य को स्पष्ट रूप से कहना उचित है, जिसे यह स्तोत्र श्रीमद्भागवत के अधिकांश अध्यायों की तुलना में अधिक सीधे रूप में व्यक्त करता है। कर्दम यह देखते हैं कि परिपक्व योगी भी, अनेक जन्मों की एकान्त साधना के पश्चात्, एकान्त में भगवान् के चरणों की मात्र झलक पाने के लिए संघर्ष करते रहते हैं (श्लोक 27-28) — फिर भी वही भगवान् अब, बिना बुलाए, एक साधारण गृहस्थ के घर में इसलिए आ गए हैं क्योंकि एक पति-पत्नी ने उन्हें श्रद्धापूर्वक पूजा था (श्लोक 29)। तात्पर्य यह नहीं कि तपस्या व्यर्थ है, अपितु यह कि भक्ति वहाँ सफल होती है जहाँ अकेली साधना सफल नहीं हो सकती: भगवान् अपने भक्त की निष्ठा का उत्तर किसी भी योग अथवा संन्यास की तकनीक

की अपेक्षा कहीं अधिक शीघ्रता से देते हैं। यही कारण है कि कपिल जो ज्ञान सिखाने आए हैं वह कभी भी शुष्क तत्त्व-मीमांसा नहीं है: कर्दम स्वयं कहते हैं कि भगवान् का उनके घर में जन्म ठीक इसीलिए हुआ ताकि उस सांख्य-पद्धति की स्थापना हो सके जो सत्य ज्ञान की ओर ले जाती है (श्लोक 30) — एक ऐसा तत्त्व-दर्शन जो अन्ततः समर्पण को गहरा करने के लिए है, उसका स्थान लेने के लिए नहीं।

“मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह प्रामाणिक है”: भगवान् का उत्तर

अपने ही पिता को कपिल का उत्तर संक्षिप्त है, किन्तु यह अत्यन्त सरल शब्दों में स्पष्ट करता है कि यह सम्पूर्ण अध्याय — तथा इससे पूर्व जो कुछ भी हुआ है — क्यों हुआ है।

भगवान् ने उत्तर दिया: “हे ऋषि, मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही विषयों में जगत् के लिए प्रामाणिक है। यह केवल आपसे किए गए अपने ही वचन को पूर्ण करने के लिए है कि मैंने आपके पुत्र के रूप में जन्म लिया है। (श्लोक 35) इस संसार में मेरा वर्तमान जन्म केवल अस्तित्व की श्रेणियों के वास्तविक स्वरूप का प्रतिपादन करने के लिए है — वह ज्ञान जो सूक्ष्म शरीर से मुक्ति चाहने वालों को आत्मा का साक्षात्कार करने में सहायता करता है। (श्लोक 36) आत्म-ज्ञान का यह रहस्यमय मार्ग दीर्घ युगों से आवृत्त रहा है; जानिए कि मैंने इसे पुनः जीवित करने के लिए ही यह स्वरूप धारण किया है। (श्लोक 37) अब जाइए, मेरे आशीर्वाद के साथ, जहाँ चाहें, तथा मुझे समर्पित कर्मों के माध्यम से अत्यन्त दुर्जय मृत्यु पर विजय पाते हुए, अमरत्व प्राप्ति की दृष्टि से मेरी आराधना कीजिए। (श्लोक 38) समस्त प्राणियों के हृदयों में निवास करने वाले परम स्वयं-प्रकाशित आत्मा रूप मुझे अपने ही हृदय में अपनी बुद्धि के द्वारा देखते हुए, आप समस्त शोक से मुक्त हो जाएँगे तथा अन्तिम, निर्भय मुक्ति प्राप्त करेंगे। (श्लोक 39) और अपनी माता को भी मैं वही आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करूँगा जो समस्त कर्म के बन्धन से मुक्त करता है, तथा जिसके द्वारा वे भी संसार-भय पर विजय पाकर परम आनन्द प्राप्त करेंगी।” (श्लोक 40)

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि भगवान् क्या नहीं कहते हैं। वे कर्दम से उन्हें पालने के लिए गृहस्थ बने रहने की माँग नहीं करते, न ही वे अपने पिता की संन्यास की प्रार्थना को किसी अनुचित वस्तु के रूप में देखते हैं। कर्दम के ऋण — अपने ही पिता के प्रति, अपनी पत्नी के प्रति, संसार के प्रति — सीधे, तथ्यात्मक रूप से चुका हुआ घोषित कर दिए जाते हैं। जो शेष रहता है वह प्रत्येक के लिए अपने ही मार्ग पर चलने हेतु खुला छोड़ दिया जाता है: कर्दम वन की ओर, देवहूति उसी ज्ञान की ओर जो उनका पुत्र सिखाने आया है।

कर्दम का प्रस्थान, तथा एक सम्पूर्ण जीवन

अध्याय का समापन-अंश अकेले कर्दम का अनुसरण करता है, और यह अपने ही विषय के अनुरूप एक स्थिरता के साथ लिखा गया है।

इस प्रकार विख्यात कपिल द्वारा सम्बोधित होकर, सृष्ट प्राणियों के स्वामी कर्दम ने आदरपूर्वक अपने पुत्र की परिक्रमा की तथा तुरन्त ही, आनन्द से परिपूर्ण होकर, वन की ओर प्रस्थान कर गए। (श्लोक 41) अहिंसा के तापस-व्रत का पालन करते हुए, तथा पूर्णतः श्रीहरि पर निर्भर रहते हुए, उन्होंने यज्ञाग्नि तथा किसी भी स्थायी निवास का त्याग कर दिया, तथा आसक्ति-रहित होकर पृथ्वी पर विचरण किया। (श्लोक 42) उन्होंने अपने मन को अनन्त ब्रह्म पर स्थिर किया — कारण तथा कार्य दोनों से परे, स्वयं त्रिगुणों से रहित किन्तु वही स्रोत जो उन्हें प्रकाश में लाता है, तथा केवल अनन्य भक्ति द्वारा ही साक्षात्कार योग्य। (श्लोक 43) अहंकार तथा स्वामित्व-भाव से मुक्त, द्वन्द्वों — सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, हर्ष-शोक — के प्रति उदासीन, तथा सभी वस्तुओं को समान दृष्टि से देखते हुए, कर्दम ने अपने ही आत्मा को सर्वत्र विद्यमान अनुभव किया; उनका मन, पूर्णतः अन्तर्मुख होकर, बिना तरंगों वाले समुद्र के समान हो गया था। (श्लोक 44) परम ज्ञानी भगवान् वासुदेव, समस्त देहधारी प्राणियों की अन्तरात्मा, पर परम भक्ति द्वारा अपना मन स्थिर करके, वे अज्ञान के उसी बन्धन से मुक्त हो गए। (श्लोक 45) उन्होंने

भगवान्, अपनी ही वास्तविक आत्मा, को समस्त जीवों में विद्यमान अनुभव किया, तथा समस्त जीवों को भगवान्, उसी आत्मा, में विद्यमान अनुभव किया। (श्लोक 46) इस प्रकार कर्दम — इच्छा-रहित, द्वेष-रहित, सर्वत्र समचित्त, तथा भगवान् की भक्ति में स्थापित — उन्हीं से एकत्व को प्राप्त हुए। (श्लोक 47)



आदरपूर्वक अपने दिव्य पुत्र की परिक्रमा करते हुए, कर्दम तुरन्त ही अग्नि-रहित, गृह-रहित, भ्रमणशील संन्यास-जीवन की ओर प्रस्थान करते हैं — उनका मन, अध्याय के ही बिम्ब में, "बिना तरंगों वाला समुद्र" बन जाता है (श्लोक 41-47)।

इच्छाद्वेषविहीनेन
सर्वत्र समचेतसा ।
भगवद्भक्तियुक्तेन
प्राप्ता भागवती गतिः ॥ ४७ ॥

icchā-dveṣa-vihīnena sarvatra sama-cetasā bhagavad-bhakti-yuktena prāptā bhāgavatī gatiḥ

अर्थ: इच्छा तथा द्वेष से मुक्त, सर्वत्र समचित्त, तथा परम भगवान् की भक्ति से सम्पन्न, कर्दम ने भगवान् के अपने भक्तों के लिए आरक्षित गति को प्राप्त किया। (स्कन्ध 3, अध्याय 24, श्लोक 47)

इस एक ही समापन-श्लोक के साथ, कई अध्याय पहले आरम्भ हुई “भगवान् कपिल की कथा” का यह क्रम अपने प्रथम वास्तविक निष्कर्ष तक पहुँचता है — कपिल की शिक्षा से नहीं, जो अभी आना शेष है, अपितु उस साधारण भक्त की शान्त पूर्णता से जिसने उस शिक्षा को संसार में प्रवेश करने का स्थान दिया।

इस अध्याय को मुख्य शिक्षाएँ

1. पूर्ण हुए वचन को महत्त्वपूर्ण दिखाई देने के लिए किसी बाह्य आडम्बर की आवश्यकता नहीं होती। कर्दम तथा देवहूति के माध्यम से भगवान् के अवतरण का वर्णन अत्यन्त सरल गार्हस्थ्य शब्दों में किया गया है — काष्ठ से प्रकट अग्नि — फिर भी सम्पूर्ण सृष्टि संगीत, नृत्य तथा गिरते पुष्पों से प्रतिक्रिया करती है; भव्यता तथा सरलता यहाँ विरोधी नहीं हैं (श्लोक 6–8)।
2. कृपा प्रायः उस प्रयास से पहले दी जाती है जो उसे अर्जित करता प्रतीत होता है। कर्दम देवहूति को यह बताने से पहले कि उन्हें क्या करना है, उन्हें यह बताते हैं कि चिन्ता न करें — भगवान् के जन्म का वचन उनकी आगामी आराधना से पहले आता है तथा उसे सम्भव बनाता है (श्लोक 2–5)।
3. स्वयं ब्रह्मा की भूमिका भी पुष्टि करना तथा उत्सव मनाना है, नियन्त्रण करना नहीं। ब्रह्मा आश्रम में पहले से ही यह जानते हुए आते हैं कि भगवान् क्यों अवतरित हुए हैं; उनकी यात्रा आनन्दपूर्ण स्वागत तथा व्यावहारिक मार्गदर्शन की है, न कि परमात्मा पर जाँच अथवा अधिकार जताने की (श्लोक 9–11)।
4. साधारण कर्तव्य तथा असाधारण रहस्योद्घाटन एक ही श्वास में समा सकते हैं। एक ही वार्तालाप में, ब्रह्मा नौ विवाहों की व्यवस्था करने से बिना किसी संक्रमण के यह घोषित करने तक पहुँच जाते हैं कि नवजात शिशु स्वयं परम पुरुष हैं — पवित्रता सांसारिक कार्यों के व्यवस्थित होने की प्रतीक्षा नहीं करती (श्लोक 12–19)।
5. सच्ची विनम्रता स्वयं अपने ही सन्तान में भी दिव्यता को पहचान लेती है। कर्दम का स्तोत्र इसलिए विलक्षण है क्योंकि यह एक पिता का अपने ही पुत्र के समक्ष झुकना है — उनका यह आश्चर्य कि भगवान् “हम-सरीखे साधारण, इन्द्रिय-बद्ध मनुष्यों के घर में” प्रकट होना चुनते हैं, इस सम्पूर्ण प्रसंग को असाधारण अनुग्रह तथा प्रेम के कार्य के रूप में पुनर्परिभाषित करता है (श्लोक 26–34)।
6. यथोचित रूप से चुकाए गए जीवन के ऋण व्यक्ति को वास्तव में मुक्त कर देते हैं। भगवान् कर्दम से स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उनके दायित्व — अपने पिता के प्रति, अपने गृहस्थ जीवन के प्रति — चुका दिए गए हैं; अब कुछ भी उन्हें बाँधता नहीं, तथा वे भक्ति द्वारा अब जिस भी मार्ग की ओर बुलाए जाएँ, उस पर चलने के लिए स्वतन्त्र हैं (श्लोक 35, श्लोक 38)।
7. संन्यास का सच्चा चिह्न अभाव नहीं, अपितु स्थिरता है। कर्दम की समापन-अवस्था मुख्यतः इस बात से वर्णित नहीं है कि उन्होंने क्या त्याग दिया है — अग्नि, गृह, सम्पत्ति — अपितु इस बात से कि वे क्या बन गए हैं: अहंकार-रहित, समचित्त, “बिना तरंगों वाला समुद्र”, भगवान् को समस्त प्राणियों में तथा समस्त प्राणियों को भगवान् में देखते हुए (श्लोक 44–47)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय में एक कोमलता है जिसे इसके वंशावली-विवरण तथा दार्शनिक शब्दावली के नीचे भूल जाना सरल है। इसके केन्द्र में एक परिवार है — एक साधारण, यद्यपि असाधारण रूप से भक्त पति-पत्नी — जिन्होंने एक वचन के पूर्ण होने की वर्षों प्रतीक्षा की है, जो उस वचन के पूर्ण होने के ठीक क्षण में भी अपने शेष सांसारिक कर्तव्यों को स्पष्ट सावधानी से पूर्ण करते हैं, तथा जो तब, बिना किसी विरोध अथवा विलम्ब के, एक-दूसरे को जाने देते हैं: पिता वन की ओर, एकान्त में उसी आत्मा को खोजने के लिए जिसे उन्होंने अभी-अभी अपने ही पुत्र के मुख में पहचाना है; माता, पीछे रहकर, उसी पुत्र से सीधे वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो आगामी अध्यायों में आने वाली है। यहाँ कुछ भी शीघ्रता में

नहीं है, तथा कुछ भी रोका नहीं गया है। इस अध्याय का वास्तविक विषय शायद कपिल का अवतार बिल्कुल भी नहीं है, अपितु वह स्वतन्त्रता है जो स्वाभाविक रूप से तब उत्पन्न होती है जब एक आत्मा बिना किसी शेष सन्देह के यह पहचान लेती है कि वह वास्तव में अब तक किसकी सेवा कर रही थी।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपने ही जीवन की किसी दीर्घकालिक आशा अथवा वचन का स्मरण करें — कुछ ऐसा जिसकी आपने वर्षों तक प्रतीक्षा की हो, ठीक जैसे देवहूति ने की। इस अध्याय के अनुसार यह ध्यान दें कि प्रतीक्षा स्वयं कभी व्यर्थ नहीं गई; वह स्वयं एक प्रकार की तैयारी थी। फिर कर्दम के उदाहरण पर भी विचार करें: जीवन के ऋण, जब ईमानदारी से चुका दिए जाते हैं, तो उन्हें पूर्णतः, बिना किसी शेष अपराध-बोध अथवा अधूरे कार्य के, नीचे रखा जा सकता है — जिससे हृदय आगे आने वाली किसी भी वस्तु के लिए मुक्त हो जाता है। अपने दिन को आगे बढ़ाने से पहले, कुछ क्षण शान्ति में बैठें और धीरे से दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” इसे, जैसा यह अपने भ्रमण के अन्तिम वर्षों में कर्दम के लिए था, भगवान् को निरन्तर हृदय में धारण करने का एक साधन बनने दें — विशेष रूप से परिवार, कार्य, तथा दैनिक जीवन के उन्हीं साधारण कर्तव्यों के मध्य, जिन्हें यह अध्याय स्वयं भक्ति की भूमि बन सकते हुए दिखाता है।

उपसंहार

तृतीय स्कन्ध का चतुर्विंश अध्याय कर्दम तथा देवहूति की दीर्घ गार्हस्थ्य-कथा को उसके मोड़-बिन्दु तक ले आता है: विवाह से पूर्व किया गया वचन अन्ततः पूर्ण होता है, दूरस्थ भव्यता के साथ नहीं अपितु काष्ठ से प्रकट होती अग्नि के अन्तरंग, शान्त रूप से चमत्कारिक बिम्ब के माध्यम से, जबकि स्वयं स्वर्ग संगीत तथा गिरते पुष्पों से इस क्षण को चिह्नित करता है। ब्रह्मा जो हुआ है उसकी पुष्टि करने तथा परिवार के शेष सांसारिक कर्तव्यों — नौ पुत्रियों का नौ महान् ऋषियों के साथ विवाह — को पूर्ण कराने के लिए आते हैं। और तब, अध्याय के वास्तविक हृदय में, एक पिता उस शिशु के समक्ष झुकता है जिसे वह अब साक्षात् परम पुरुष के रूप में जान चुका है, उन्हें आश्चर्य तथा समर्पण का एक स्तोत्र अर्पित करता है, तथा अपने ऋणों के पूर्णतः चुका दिए जाने पर, भ्रमणशील संन्यास-जीवन की ओर प्रस्थान करता है जो हानि में नहीं अपितु एकत्व में समाप्त होता है — अन्ततः, बिना तरंगों वाला एक समुद्र। पीछे स्वयं कपिल रह जाते हैं, भगवान् जो अब मानव-शिशु के रूप में देहधारी हैं, पहले से ही उस कार्य की ओर उन्मुख जो आगामी अध्यायों में होगा: अपनी ही माता को, और उनके माध्यम से सम्पूर्ण संसार को, शोक से परे ले जाने वाला मार्ग सिखाना।

श्रीमद्भागवत की दिव्य ज्ञान-ज्योति हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), तृतीय स्कन्ध, अध्याय 24, पृष्ठ 243–246।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम् • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र की आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं तथा उनके अर्थ सार-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका की पुनरावृत्ति नहीं है। किसी भी प्रकाशक से सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-3-adhyay-24-bhagwan-kapil-ka-avatar.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

